International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(5): 28-32
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-07-2023
Accepted: 07-08-2023

डॉ. निशा गोयल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कालिन्दी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. निशा गोयल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कालिन्दी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक का महत्त्व

डॉ. निशा गोयल

सारांश
कालिदास आकाश में जगमगाते हुए नक्षत्रों के समान विश्व में सर्वोत्कृष्ट स्थान पर विराजमान हैं। इनको भारत का शेक्सपीयर भी कहा जाता है। इनकी प्रसिद्धि का कारण इनकी वैदर्भी शैली है। भाषा के सरल, सरस और मनोरम होने के कारण वह पूर्ण रूप से इनके वश में है। इनकी शैली ध्वन्यात्मक है। ये किसी भी बात का लम्बा-चौड़ा वर्णन न करके अत्यंत सूक्ष्म रूप में उसे प्रस्तुत कर देते हैं। इनकी भाषा पूर्ण रूप से पात्रों के अनुकूल है, जैसे कण्व ऋषि-जनोचित भाषा बोलते हैं और स्त्रियाँ स्त्रियों के अनुकूल भाषा बोलती हैं। ये वर्णन मे असाधारण कुशल हैं। इनके वर्णन में जीवंतता के दर्शन होते हैं। ये प्रकृति के वर्णन में अत्यन्त निपुण है। इनके नाटकों के संवाद संक्षिप्त, सरल और रोचक हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में उपमा और अर्थान्तरन्यास के साथ-साथ अनेक अन्य अलंकारों का भी प्रयोग किया है। यद्यपि ये श्रृंगार रस के वर्णन में सिद्धहस्त हैं , तथापि इनके अनुसार जो प्रेम विषय-वासना पर आधारित है, वह वास्तविक प्रेम नहीं है। तपस्या से पवित्र हुए प्रेम को ही इन्होने स्वीकार किया है। दुष्यन्त का शकुन्तला के साथ प्रथम प्रेम बाह्य सौन्दर्य पर आश्रित था और विषय - वासना प्रधान था, अत: वह प्रेम सफल नहीं हुआ। वियोग के बाद दोनों का प्रेम तपस्या की अग्नि से पवित्र होकर सफल हुआ। इनके नाम से 41 रचनाएँ प्रचलित हैं परन्तु विद्वानों द्वारा सर्वसम्मति से इनके 7 ग्रन्थ- कुमारसम्भव एवं रघुवंश नामक दो महाकाव्य , ऋतुसंहार और मेघदूत नामक दो गीतिकाव्य, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय तथा अभिज्ञानशाकुन्तल नामक तीन नाटक स्वीकृत हैं।

कूटशब्द: कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तल, वैदर्भी शैली

प्रस्तावना
काव्यशास्त्रियों के अनुसार काव्य के मुख्य दो भेद हैं - श्रव्यकाव्य और दृश्यकाव्य। दृश्यकाव्य के पुन: दो भेद स्वीकृत हैं- रूपक और उपरूपक। रूपक के 10 भेदो में से नाटक को सर्वोत्तम कहा गया है। अनेक नाटकों में से शाकुन्तल सर्वश्रेष्ठ है। शाकुन्तल का भी चतुर्थ अंक महत्त्वपूर्ण है और उसमें से भी उसके चार श्लोक |

"काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि चतुर्थोऽक: तत्र श्लोकचतुष्टयम् ॥"

यद्यपि विद्वानों के द्वारा चतुर्थ अंक का महत्त्व उसमें निहित चार श्लोकों से माना गया है जिनमें जीवन के सार्वभौम सत्य के दर्शन होते हैं। तथापि इसके महत्त्व के अनेक कारण हो सकते हैं। जैसे-

- दुर्वासा का शाप
- प्रकृति – वर्णन
- अलौकिक तत्त्वों का समावेश
- उपमा एवं अर्थान्तरन्यास अलंकार
- चार प्रसिद्ध श्लोक
- सार्वभौम सत्य
- शकुन्तला की विदाई

इन्होने दुर्वासा के शाप को विष्कम्भक में प्रस्तुत किया है। अनसूया और प्रियंवदा शकुन्तला की दो सखियाँ फूल चुनते हुए शकुन्तला के विषय में वार्तालाप कर रही हैं कि दुष्यन्त और शकुन्तला ने गान्धर्व विवाह कर लिया है और वह वापिस अपने नगर चला गया है, इधर शकुन्तला यद्यपि कुटी में तो है परन्तु वह दुपयन्त की यादों में खोई हुई है तो सखियों की चिन्ता का विषय यह है कि राजा रनिवास में रहने वाली रानियों से मिलकर शकुन्तला को याद भी रखेगा या नहीं। तभी उन्हें कुटी से किसी अतिथि की आवाज सुनाई देती है। जब महर्षि दुर्वासा ऋषि कण्व के आश्रम में आते हैं और शकुंतला अपने कर्त्तव्य रूप कर्म अतिथि सत्कार को पूर्ण नहीं करती है तो वे उसे शाप देते हैं कि कि तू जिसके विषय में इतना तल्लीन होकर सोच रही है और मुझे देख भी नहीं रही है, वह एक उन्मत्त व्यक्ति के समान तुझे भूल जायेगा।

"विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथाम प्रमत्त: प्रथमं कृतामिव ॥"[1]

इस में कालिदास यह बताना चाहते हैं कि यदि कोई अपने कर्तव्य का ठीक से पालन नहीं करता, तो उसे उसके परिणाम को भोगना पड़ता है, जैसे शकुन्तला का कर्तव्य था कि ऋषि कण्व की अनुपस्थिति में कुटी में आए हुए प्रत्येक अतिथि का स्वागत-सत्कार करे, जबकि वह दुष्यन्त की याद में मग्न थी और अपने कर्तव्य को भूल चुकी थी। इस भूल का दुष्परिणाम यह होता है कि राजा शकुन्तला को भुला देता है एवं उसका परित्याग कर देता है। इस नाटक में 'भूलना' एक महत्त्वपूर्ण घटना है जिसके द्वारा नाटककार ने नायक के चरित्र को दूषित नहीं होने दिया और मछुआरे द्वारा अंगूठी के प्राप्त होने पर उसको सारी घटना याद आ जाती है जो उसे अपने कर्तव्य को पूर्ण करने की प्रेरणा देती है तथा अन्त में दोनों मिलकर पुत्र सहित सुखपूर्ण जीवन बिताते है। इस प्रकार शकुन्तला के ऊपर भविष्य में होने वाली विपत्ति की सूचना भी मिल जाती है।
विष्कम्भक के बाद नाटककार ने उस प्रातःकाल को चित्रित किया है जिस समय सूर्य उदित हो रहा है और चन्द्रमा अस्त हो रहा है - इस वर्णन के द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि जगत में सुख -दुःख का चक्र अवश्यम्भावी है, अतः मनुष्य को अपने अन्दर उन्हें सहन करने की क्षमता रखनी चाहिए।

"यात्येकतोऽस्तशिखरंपतिरोषधीना-
माविष्कृतोऽरुणपुरःसर: एकतोऽर्क:।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोकों नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु ॥"[2]

इससे यह संकेत भी मिलता है कि सुख एवं दुःख का आना आवश्यक है, इसलिए शकुन्तला पर विपत्ति आएगी, उसका पति से वियोग होगा और उसकी स्थिति दयनीय होगी, परन्तु तपस्या से पवित्र होने पर उस दुःख की समाप्ति हो जाएगी और शकुन्तला का उसके पति के साथ मिलन भी हो जाएगा।
कवि ने इसी अंक में अनेक अलौकिक तत्वों का समावेश किया है, इसलिए भी इस अंक का महत्त्व बढ़ जाता है।
जब अनसूया अपने विचारों में उलझी हुई है कि पिता कण्व सोमतीर्थ से वापिस आ गए हैं और शकुन्तला गर्भवती है तो उनको यह समाचार किस प्रकार दिया जाए, उसी समय प्रियंवदा आकर उसे प्रिय समाचार सुनाती है कि शकुन्तला को विदा करने का समय आ गया है | तब अनसूया के पूछने पर वह बताती है कि यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर अशरीरधारी छन्दोमयी वाणी ने पिता काश्यप को यह बताया कि हे ब्रह्मन् ! जिस प्रकार अग्नि शमी वृक्ष के अन्दर स्थित होती है, उसी प्रकार पृथ्वी के कल्याण के लिए तुम्हारी पुत्री के गर्भ में दुष्यन्त का तेज स्थित है, ऐसा तुम समझ सकते हो।

"दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुव:।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव ॥"[3]

शकुन्तला की विदाई के अवसर पर दो ऋषि कुमार उसके लिए आभूषण लेकर आते हैं। तब गौतमी के पूछने पर कि ये आभूषण क्या ऋषि कण्व के मानसिक संकल्प के फल हैं, वे बताते है कि हम ऋषि की आज्ञानुसार वृक्षों से फूल चुनने गए थे, तब एक वृक्ष ने ऐसे श्वेत रेशमी वस्त्र को प्रदान कर दिया जो चन्द्रमा के समान है और मंगल करने वाला है। दूसरे ने ऐसे महावर को प्रस्तुत किया जो शकुंतला के पैरों पर लगाने योग्य था , एक और वृक्ष ने हाथ की कलाई तक बाहर निकले हुए सुन्दर कोंपलों से प्रतिस्पर्धा करने वाले, वन देवताओं के करतलों द्वारा आभूषण प्रस्तुत कर दिए।

"क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा मांगल्यमाविष्कृतं
निष्ठ्यूतचरणोपभोगसुलभो लाक्षारस: केनचित्।

अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितै -
दत्तान्याभरणानि न : किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः ॥"[4]

शकुन्तला का वृक्षों के प्रति अनन्य प्रेम था, अत: जब ऋषि कण्व ने उन वृक्षों से शकुन्तला की विदाई के लिए स्वीकृति देने के लिए कहा, तब उसी समय कोयल की ध्वनि सुनाई पड़ी जिससे महर्षि ने अनुमान लगाया कि इन वृक्षों ने सुन्दर कोयल की आवाज में मानो उसको जाने की अनुमति दे दी है।

"अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभि:।
परभृतविरुतंकलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम् ॥"[5]

उसी समय देवताओं ने भी आकाशवाणी के माध्यम से शकुन्तला के प्रस्थान को कल्याणकारी बनाने का शुभ आशीर्वाद दिया-

"रम्यान्तर : कमलिनीहरितै: सरोभि-
श्छाया द्रुमैर्नियमितार्कमयूखताप:।
भूयात कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्या:
शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः ॥"[6]

जिस समय शकुन्तला अपने पति के घर जा रही थी अर्थात् जब उसकी विदाई हो रही थी, उस समय शकुन्तला के मन की जो दशा थी, प्रकृति भी तदनुरूप ही प्रतीत हो रही थी, यथा –

"उद्गलितदर्भकवला मृग्य: परित्यक्तनर्तना मयूरा:।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः ॥"[7]

कालिदास ने इस में जड़ प्रकृति और चेतन मृग एवं मयूर को शकुन्तला के समान दुःखी दिखाया है कि उन्होंने अपने दुःख को व्यक्त करने के लिए ही मानो दर्भ के ग्रास उगल दिया, नृत्य करना छोड़ दिया और पके हुए पत्रों को गिराने के द्वारा मानो लताएँ अपने आंसू को डाल रही है।
इस प्रकार नाटककार ने बाह्यप्रकृति के साथ मानव की अन्तः प्रकृति का गूढ सम्बन्ध स्थापित किया है।
यह अंक सर्वश्रेष्ठ इसलिए भी है कि इसमें करुण भाव का सर्वोत्तम चित्रण हुआ है प्रत्येक दृश्य अत्यन्त मार्मिक है। प्रसिद्ध चार श्लोक भी इसी कारण प्रसिद्ध हुए हैं क्योंकि उनमें करुण भाव की छटा सर्वोत्तम हैं और जो भावादि की दृष्टि से सर्वोत्तम हैं।

"यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठ्या
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकस :
पीड्यन्ते गृहिण: कथं नु तनयाविश्लेषदु:खैर्नवै : ॥"[8]

इस श्लोक में करुणभाव का प्रवाह सर्वोत्तम है। ऋषि होने के कारण पिता कण्व ने अपने अश्रुप्रवाह को रोक तो लिया, परन्तु उसके कारण उनका गला मानो रुंध गया, दृष्टि जड़ सी हो गई। वे सोचने लगे कि जब मैं पुत्री के जाने से इतना व्यथित हूँ तो वास्तव में गृहस्थ के दुःख की क्या दशा होती होगी। यह तो वास्तव में कल्पनातीत ही है।

"शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीप गम:।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयों वामा: कुलस्याधय: ॥"[9]

इस श्लोक में पिता द्वारा विदा होती हुई पुत्री को उपदेश दिया गया है कि उसे अपनी ससुराल में अपने अच्छे व्यवहार द्वारा सबको प्रसन्न रखना चाहिए। उसका प्रथम कर्तव्य है कि वह गुरुजनों की सेवा करे और उनके साथ मधुर व्यवहार करे। जब पति किसी कारण क्रोध कर रहा हो, उस समय भी पत्नी को विनम्र रहना चाहिए- यह शिक्षा दी गई है। सपत्नियों के साथ भी एक सखी के समान व्यवहार करने के लिए कहा गया है।

"अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चै: कुलं चात्मन-
स्त्वय्यस्या: कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः ॥"[10]

इसमें कन्यापक्ष की ओर से कन्या के पिता ऋषि कण्व द्वारा दुष्यन्त को सन्देश दिया गया है। इसमें कन्या के पिता की हार्दिक कामना को अत्यन्त सुन्दर रूप से प्रकट किया गया है।

"पातुं न प्रथमं व्यवस्यति ज लं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सव:
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥"[11]

इस श्लोक में भी करुणभाव का अत्यन्त मर्मस्पर्शी चित्रण है क्योंकि इसमें अन्तः प्रकृति के साथ बाह्य प्रकृति के ऐकात्म्य का अनुभव किया गया है। इसमें आश्रम के वृक्षों की तरफ शकुन्तला के वात्सल्यभाव की अतिशयता प्रकट की गई है।
इन चारों श्लोकों में कवि ने 'शार्दूलविक्रीडित' नामक छंद प्रयुक्त किया है।

इन चार श्लोकों में सार्वभौमिक एवं सर्वकालिक सत्य के दर्शन होते हैं। जब शकुन्तला विदा हो रही है , उस समय कण्व की जो स्थिति है, वह आज के युग में भी देखी जाती है जब कन्या की विदाई होती है, तब आज भी उसका पिता उसी प्रकार दुःखी होता है। आज भी वह पुत्री को यही सन्देश देता है कि अपने सास-ससुर की सेवा करना, पति के साथ मधुर व्यवहार रखना, देवरानी जेठानी के साथ मिल-जुल कर रहना और ससुराल में अपने शान्तिपूर्ण व्यवहार से सुखी रहना। इसी प्रकार वह अपने दामाद से भी यहीं बात करता है कि मैंने अपनी बेटी को बड़े लाडों से पाला है। अगर इससे कभी भूलवश कोई गलती हो जाए तो उसे क्षमा कर देना और इसके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना।
जो कन्या अपने पिता के द्वारा दिए गए संस्कारों का पूर्ण रूप से पालन करती है वह विवाह के बाद भी सुखी रहती है अन्यथा उसे दुःख भोगना पड़ता है।
इस प्रकार इन श्लोकों की सार्थकता प्रत्येक युग में दृष्टिगोचर होती है।

'उपमा कालिदासस्य'
सभी विद्वानों के अनुसार कवि का प्रिय अलंकार उपमा है। चतुर्थ अंक में भी उपमा अलंकार के उदाहरण मिलते हैं। कण्व ऋषि के द्वारा शकुन्तला को आशीर्वाद उपमा अलंकार के माध्यम से दिया गया - कि तू शर्मिष्ठा के समान वंशप्रवर्तक पुत्र को जन्म दे-

"ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि ॥"[12]

जब शकुन्तला पिता कण्व से वियुक्त होकर दुःखी होती है, तब वे उसे कहते हैं कि जब तुम्हारा पुत्र उत्पन्न होगा , तब तुम उसके पालन-पोषण में इतनी व्यस्त हो जाओगी कि तुम्हारे पास हमें याद करने का समय ही नहीं होगा क्योंकि माँ की ममता एवं व्यस्तता केवल अपनी संतान तक ही सीमित हो जाती है –

"अभिजनवतोभर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे
विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
तनयमचिरात्प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचम् गणयिष्यसि ॥"[13]

'अर्थान्तरन्यासविन्यासे कालिदासो विशिष्यते'
कालिदास अर्थान्तरन्यास अलंकार के प्रयोग में भी विशिष्ठ माने जाते हैं।

"अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे
दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा।
इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य
दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि ॥"[14]

इसमें उत्तरार्ध में सामान्य विषय के द्वारा स्त्रियों के के विषय में बताया गया है कि ये अपने प्रियजनों का वियोग अत्यन्त कठिनाई पूर्वक ही सहन कर पाती है जिसके द्वारा पूर्व की दो पंक्तियों में विशेष बात बताई गयी है कि जब चन्द्रमा छिप जाता है , तो कुमुदिनी भी शोभाहीन हो जाती है।

"एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्।
गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति॥"[15]

अर्थात् यह भी अपने प्रिय के बिना इतनी दुःखी होती है कि उसे वह रात अत्यंत लम्बी प्रतीत होती है, परन्तु उसे यह आशा होती है कि रात के बाद सुबह आएगी और वह इस कष्ट को भी सहन कर लेती है।
इसमें उत्तरार्ध में विशेष बात बताई है जिसका समर्थन सामान्य अर्थ से किया गया है, इसलिए अर्थान्तरन्यास अलंकार है।
निष्कर्षतः अभिज्ञानशाकुन्तलम् का यह अंक अन्य अंकों की अपेक्षा सर्वाधिक प्रशंसनीय और कमनीय है। कवि ने इस अंक में केवल मानव स्वभाव के सभी पहलूओं को ही मात्र चित्रित नहीं किया है, अपितु प्रकृति का भी मानवीकरण कर दिया है। इसके अतिरिक्त कवि ने इस अंक में व्यञ्जना के द्वारा अनेक घटनाओं को प्रस्तुत किया है जैसे दुर्वासा के शाप को एक ही श्लोक में बता दिया है। इसी प्रकार कण्व ऋषि ने भी एक ही श्लोक के माध्यम से शकुन्तला और दुष्यन्त को सन्देश दिया है।
सखियाँ दुर्वासा के शाप को याद करके भयभीत थीं और शकुन्तला इससे अनभिज्ञ थी, तब उन्होंने अन्त में शकुन्तला को अंगूठी दिखाने के लिए कह दिया कि अगर राजा तुम्हें पहचान न सके तो तुम उसके सामने यह अंगूठी रख देना|
जब शकुन्तला दुष्यन्त के लिए अनेक प्रकार के विचार रूपी समुद्र में गोते लगा रही थी, तभी उसे चकवी की आवाज सुनाई दी तो शकुन्तला कहती है कि जिस प्रकार वह चकवी अपने साथी चकवे को नहीं देख पा रही है जो कमल के पत्ते के बीच में बैठा हुआ है तो वह व्याकुल हो रही है और शोर कर रही है , उसी प्रकार मैं भी दुष्यन्त को नहीं मिल पाने के कारण दुःखी हूँ और अत्यन्त कठिन कार्य कर रही हूँ।
अन्ततः, यह अंक काव्यत्व के भाव से, सामाजिक और लोकव्यवहार के भाव से अत्यन्त श्रेष्ठ है। यह अंक मानवीय संवेदनाओं से भरा हुआ है, इसमें सामाजिक मर्यादाओं एवं लोकपरम्परा का अनूठा चित्रण मिलता है।

इस अंक के अन्त में कवि ने उत्प्रेक्षा अलंकार के माध्यम से वास्तविकता के दर्शन कराए हैं। कि कण्व ऋषि विचार करते हुए मानो सुख की सांस लेते हुए कहते हैं कि आज पुत्री को पति के घर भेजकर मैं निश्चित हो गया हूँ जैसे- किसी के पास यदि किसी का धन या कोई वस्तु रखी होती है और वह उसे उसके स्वामी को लौटा देता है तो वह चैन की सांस लेता है।

"अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतु:।
जातो ममायं विशद : प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥"[16]

सन्दर्भ

1. अभिज्ञानशाकुन्तल 4.1
2. वही 4.2
3. वही 4.4
4. वही 4.5
5. वही 4.10
6. वही 4.11
7. वही 4.12
8. वही 4.6
9. वही 4.18
10. वही 4.17
11. वही 4.9
12. वही 4.7
13. वही 4.19
14. वही 4.3
15. वही 4.16
16. वही 4.22